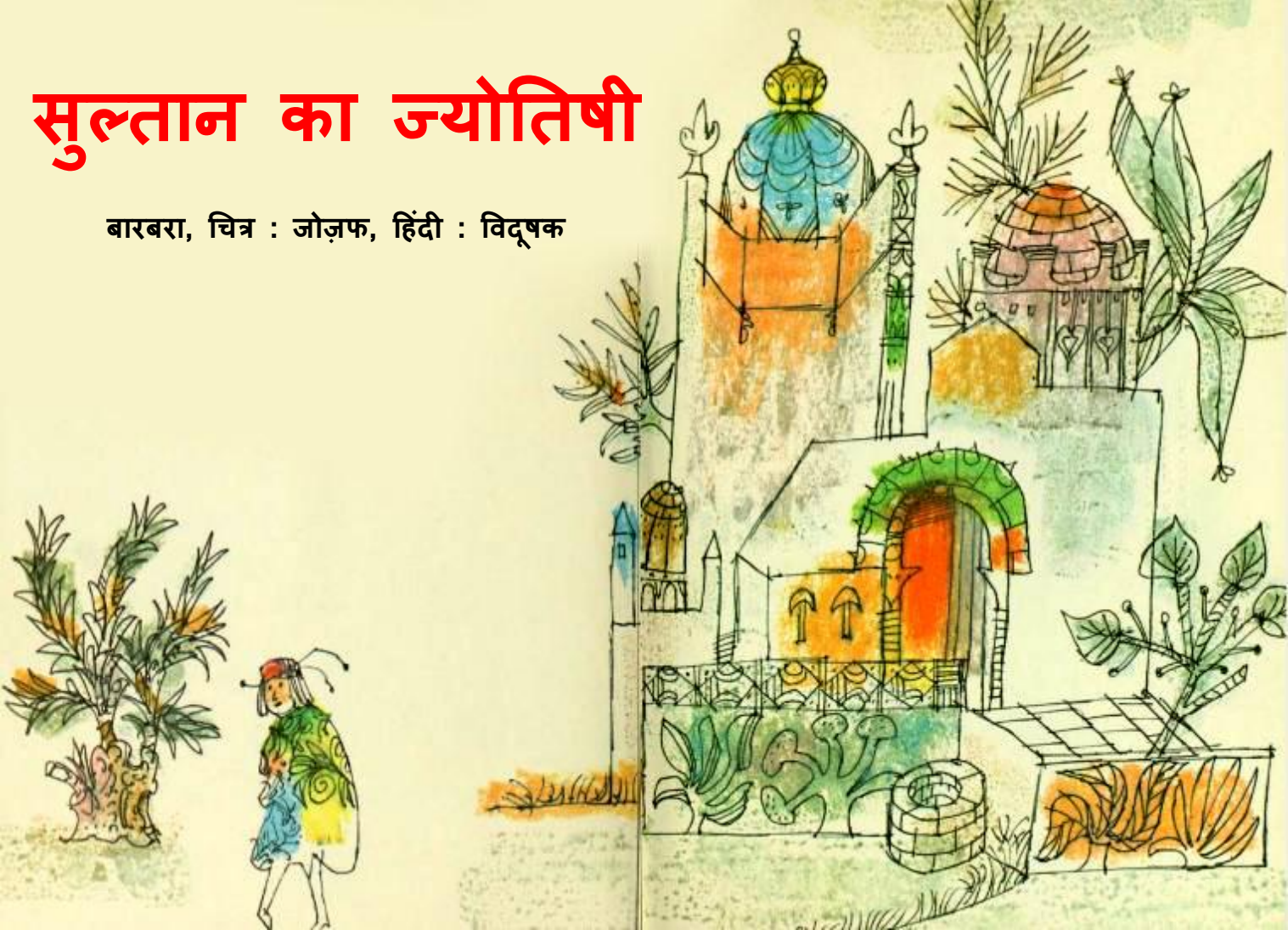


सुल्तान का ज्योतिषी

बारबरा, चित्र : जोज़फ़, हिंदी : विदूषक







बहुत पुराने ज़माने की बात है. एक बूढ़ा लकड़हारा एक गाँव के किनारे पर रहता था. रोजाना वो एक कंधे पर मोटी रस्सी और कुल्हाड़ी और दूसरे कंधे पर एक थैला लटकाकर जंगल जाता था. थैले में रोटी और पनीर का छोटा टुकड़ा होता था. सुबह के समय वो कुल्हाड़ी से लकड़ी काटता था. दोपहर के बाद वो बाज़ार में जाकर चिल्लाता था - “लकड़ी! जलाऊ लकड़ी!” अल्लाह की दुआ से लकड़हारा पेट भरने लायक कमा लेता था. उन पैसों से वो खुद और अपनी पत्नी के लिए डबलरोटी, पनीर का टुकड़ा, और चार-पांच जैतून खरीदता था.



अगर उसकी पत्नी इस सबसे संतुष्ट होती तो शायद उसकी ज़िन्दगी इसी तरह चलती रहती. पर पत्नी में रईस बनने की बड़ी प्रबल इच्छा थी. एक दिन वो पानी का मटका लेकर हम्माम की तरफ गई. तभी इत्तिफाक से हम्माम के सामने एक पालकी आकर रुकी जिसे चार कहार ढो रहे थे. पालकी में से एक औरत उतरी. देखने में वो इतनी खूबसूरत थी और वो इतने चमकीले और महंगे जेवर पहने थी, कि बिचारे लकड़हारे की पत्नी अपना होश खो बैठी. जब नौकर उसका तौलिया और कपड़े लेकर अन्दर गए तो वो टकटकी लगाए उन्हें लगातार घूरती रही.

जैसे ही हम्माम का दरवाज़ा बंद हुआ, लकड़हारे की पत्नी ने हम्माम के चौकीदार की कमीज़ को खींचा और हल्के से पूछा, “वो कौन है?”

“अरे तुम्हें नहीं पता?” चौकीदार चिल्लाया. “वो सुल्तान के प्रमुख ज्योतिषी की बीबी है.”



“ज्योतिषी,” लकड़हारे की पत्नी ने, गाँव के फव्वारे पर मटका भरते हुए कहा. “मेरे पति को भी सुल्तान का ज्योतिषी बनना चाहिए. फिर मैं भी सुन्दर कपड़े और महंगे जेवर पहनकर इधर-उधर घूमूंगी. मेरे आगे-पीछे भी सामान लेकर नौकर-चाकर घूमेंगे.”

उस दिन जब लकड़हारे ने अपनी झोपड़ी में कदम रखा, तब उसे अपने कानों में सिर्फ ज्योतिषी! ज्योतिषी! शब्द ही सुनाई दिया. “तुम्हें सुल्तान का ज्योतिषी बनना चाहिए,” पत्नी ने उससे आग्रह किया. लकड़हारे ने कहा कि उसकी पत्नी की मत मारी गई थी. “तुम चाहती हो कि मैं एक आलीशान घर में रहूँ, रेशम के कपड़े पहनूँ और गले में सोने की जंजीर लटकाऊँ. पर ज़रा मेरी हालत तो देखो – मैं कैसे चिथड़े पहने हूँ.”

जब बीबी सांस लेने के लिए कुछ देर रुकी, तब लकड़हारे ने कहा, “सुनो! मैं भला कैसे सुल्तान का ज्योतिषी बन सकता हूँ? हाँ मैं चाहता हूँ कि तुम एक आलीशान बंगले में रहो और कीमती कपड़े और जेवर पहनों. पर मैं बिल्कुल एक टिड्डे जैसा गरीब आदमी हूँ. मैं एक डबलरोटी और पनीर का टुकड़ा खाकर जिंदा रहता हूँ. क्या मैं सपने में भी कभी ज्योतिषी बनने की बात सोच सकता हूँ? मेरी प्रार्थना है कि जो कुछ भी हमारे पास है तुम उसी में गुज़र करो और खुश रहो. देखो हमारा एक छोटा सा घर है, हमारा पेट भर जाता है और बदन पर कपड़े हैं.”



पर क्या आप किसी जिद्दी औरत को कभी कोई अच्छी बात समझा सकते हैं? पत्नी ने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी. पति सुल्तान का ज्योतिषी बने इसलिए वो उसके पीछे पड़ी रही. हर बार लकड़हारा यही कहता, “देखो यह कैसे संभव हो सकता है? तुम ऐसी बेफजूल बात के बारे में सोच भी कैसे सकती हो?” पर क्योंकि वो लकड़हारा एक भला आदमी था और अपनी बीबी से प्यार करता था इसलिए उसने उस विषय के बारे में कम-से-कम सोचने का वादा किया.

कुछ दिनों बाद लकड़हारे की बीबी
की सुबह-सुबह आँख खुली. शहर में घोषणा करने वाला
आदमी ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था, "खो गई! खो गई!
सुल्तान की बेटी की सबसे कीमती अंगूठी खो गई है.
अंगूठी ढूँढने वाले को बढ़िया इनाम मिलेगा!"

"जल्दी उठो! जल्दी उठो पतिदेवा!" लकड़हारे की
बीबी ने कहा. "जिस मौके की हमें तलाश थी लगता है
वो आ गया है. तुम तुरंत सुल्तान के पास जाओ और
उनसे कहो कि तुम एक पहुंचे हुए ज्योतिषी हो, और
तुम ज़रूर उनकी बेटी की अंगूठी ढूँढ निकालोगे. जल्दी
जाओ! और सुनो, सुल्तान का ज्योतिषी बनने के बाद
ही तुम्हें घर में वापिस कदम रखने दिया जाएगा."



लकड़हारा अपनी बीबी के साथ बहुत साल रहा था। उसे पता था कि अब वो एक ऐसी सड़क पर आगे बढ़ रहा था जहाँ कोई मोड़ नहीं था। “मैं अल्लाह का नाम लेकर अपना यह मुहिम शुरू करता हूँ,” उसने खुद से कहा। फिर नाक से पैरों तक कांपते हुए वो खरामा-खरामा चलते हुए सुल्तान के दरवाज़े तक पहुँचा। वहाँ उसने खुद को नया ज्योतिषी बताया जो अंगूठी ढूँढने के लिए आया था।

उसके बाद लकड़हारे को सीधा सुल्तान के सामने पेश किया गया। “देखो ज्योतिषी, अगर तुमने अंगूठी ढूँढ निकाली तो तुम्हें बढ़िया इनाम मिलेगा। पर अगर उसमें तुम फेल हुए तो तुम्हें उसकी कीमत अदा करनी होगी और तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जाएगी,” सुल्तान ने ऐलान किया। सुल्तान को उस बेहद साधारण बूढ़े आदमी की काबलियत पर शक भी हो रहा था।

“ज़नाब, मैं आपकी बात समझ रहा हूँ,” लकड़हारे ने कहा। “मेरी आपसे सिर्फ एक ही गुज़ारिश है। अगर आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करेंगे तो आपका बड़ा एहसान होगा।”

“हाँ बताओ? तुम क्या चाहते हो?”



“मुझे चालीस दिनों और चालीस रातों के लिए अकेला छोड़ दें जिससे मैं अल्लाह के नेमत और उसकी रहमत पर चिंतन कर सकूँ. उसके बाद अल्लाह ने चाहा तो पूरी सच्चाई सामने आ जाएगी.” लकड़हारे को अपनी असलियत का अच्छा एहसास था. वो कोई ज्योतिषी नहीं था और यह काम पूरी तरह उसकी क़ाबलियत के बाहर का था.

सुल्तान ने इस बारे में सोचा. फिर उन्होंने कहा, “क्योंकि प्रमुख ज्योतिषी भी इस बारे में मेरी कोई खास मदद नहीं कर पाया है इसलिए मैं तुम्हें इस काम को करने के लिए चालीस दिनों और चालीस रातों की मोहलत देता हूँ.”

फिर सुल्तान ने अपने सबसे वफ़ादार नौकर को बुलाया. वो लकड़हारे को उस कमरे में ले गया जहाँ छत के पास एक बड़ी खिड़की थी. लकड़हारे के कमरे में जाने के बाद, उसमें बाहर से ताला लगा दिया गया, जिससे कि वो बिना किसी शोर-शराबे के गहराई से सोच-विचार कर सके.

दिन बीतते गए और लकड़हारा उस कमरे के पत्थर के फर्श पर लेफ्ट-राइट करता रहा. रात को वो आसमान में तारों के सैलाब को घूमते हुए घूरता था. वो तारे बिचारे साधारण लकड़हारे को क्या सच्चाई बताते – बस यही कि वो कोई ज्योतिषी नहीं, बल्कि एक गरीब लकड़हारा था.



वो सितारों के नमूनों को घंटों ताकता था पर उन तारों के झुरमुटों में उसे कोई अंगूठी नहीं दिखी. उसे बार-बार अपनी सही औकात याद आती रहती थी - वो अल्लाह की निगाह में एक अदना सा आदम टिड्डा था!

हर रोज़ सुल्तान का पसंदीदा नौकर लकड़हारे के लिए खाना लाता था. खाना बेहद स्वादिष्ट और लज़ीज़ था क्योंकि वो सीधा सुल्तान की मेज़ से आता था. पर क्योंकि लकड़हारे की ज़िन्दगी एक कच्चे धागे से लटकी थी इसलिए उसकी भूख-प्यास, रफूचक्कर हो गई थी. वो खाना लकड़हारे को बस एक बात की याद दिलाता था - हर रोज़ उसकी ज़िन्दगी का एक दिन कम हो रहा था. जल्द ही सुल्तान को लकड़हारे की असलियत का पता चल जाएगा. नए ज्योतिष को यह दुःख अन्दर से खाए जा रहा था.

हर शाम जब नौकर खाना लाता, तो लकड़हारा उसमें से सिर्फ़ एक छोटी कटोरी भर खाना ही खाता. बाकी थाली वो एक कोने में रख देता था. धीरे-धीरे कमरे में बासी थालियों की तादाद बढ़ती गई. उस समय लकड़हारा खुद से बड़बड़ाते हुए कहता था, "तीस दिन बाद सुल्तान असलियत जान जाएगा," या फिर "उनतिस दिन बाकी बचे हैं, फिर सुल्तान असलियत जान जाएगा,"



उस नौकर के दिल में भी एक अजीब सा डर पनप रहा था, क्योंकि उस वफादार नौकर ने ही सुल्तान की बेटी की अंगूठी चुराई थी। वो क्योंकि वफादार था इसलिए उसे सुल्तान के घर में अन्दर-बाहर जाने की पूरी इजाज़त थी। एक दिन उसे अंगूठी दिखाई दी और उसने वो उठा ली और उसे अपने कुरते की मुड़ी आस्तीन में छिपा ली। उसे पता था कि कोई भी उस पर शक नहीं करेगा। जैसे-जैसे ज्योतिषी के दिन बीतते गए, उस नौकर को भी रोज़ ज्योतिषी की बातें सुनने का मौका मिलता रहा। “सिर्फ तीन दिन और बचे हैं, फिर सुल्तान को पता चल जाएगा।” अब नौकर को साफ़ लगने लगा कि उसकी चोरी पकड़ी गई थी। बचने का सिर्फ एक तरीका था – वो ज्योतिषी को पूरी सच्चाई बता दे। तब शायद वो नेक-दिल इंसान उसके बचने का कोई तरीका ढूँढ निकाले।

अगले दिन शाम को नौकर खाने की थाली ज्योतिषी के कमरे के अन्दर लाया और उसने उसे ज़मीन पर सही जगह पर रखा। फिर इधर-उधर झाँकने के बाद नौकर ने कमरे को अन्दर से बंद किया। फिर वो घुटनों के बल ज्योतिषी के सामने हाथ जोड़कर बैठ गया। “महाशय, मुझ पर रहम करें,” उसने भीख मांगते हुए कहा, “ज़रा मेरी कहानी सुनें। मुझ जैसे नीच इंसान की हरकत सुनें। फिर मुझ पर रहम खाएं और मेरी मदद करें!”



उसके बाद नौकर ने रोते-रोते, सुबकते-सुबकते अपनी पूरी राम कहानी पूरे विस्तार से सुनाई. "महाशय आपने कल शाम कहा था, 'सिर्फ तीन दिन और बचे हैं, फिर सुल्तान को पता चल जाएगा,'" नौकर ने कहा. "अब सच्चाई पता लगने में सिर्फ दो ही दिन बाकी हैं. मेरी एक गुस्ताखी से अल्लाह को कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा. मुझ पर क्या गुज़र रही है उसका आप जैसे बुद्धिमान इंसान को भी कोई अंदाज़ नहीं होगा. मैं दिन भर गम में डूबा रहता हूँ. रात को एक पल भी नहीं सो पाता हूँ. पर अगर सुल्तान को मेरी गुस्ताखी का पता चल गया तो रोज़ी-रोटी के साथ-साथ मेरा सिर भी कलम हो जाएगा! मेहरबान मुझ पर रहम करें. मेरे इस पाप और कुकर्म के बारे में सुल्तान को न बताएं. अगर आप मेरी मदद करेंगे तो फिर आप जो कहेंगे मैं वो करूंगा!"

अड़तीस दिनों में उस गरीब लकड़हारे ने पहली बार एक चैन की सांस ली. अल्लाह ने खुद आकर उस टिड्डे जैसे अदना इंसान की लाज रखी थी. इसलिए घुटनों के बल बैठे उस गरीब नौकर की हालत पर लकड़हारे को रहम आया.

लकड़हारे ने नौकर के हाथों को ज़ोर से दबाया और उसकी आँखों में घूरकर कहा. "तुम फ़िक्र मत करो. अल्लाह का शुक्र है. मैं पूरे मामले को इस तरह से संभालूँगा कि किसने अंगूठी चुराई वो सच किसी को कभी पता नहीं चलेगा. सच्चाई किसी को मालूम नहीं पड़ेगी और अंगूठी भी मिल जाएगी. इसके लिए तुम्हें सिर्फ एक काम करना पड़ेगा. तुम कल बाज़ार से जाकर एकदम काले रंग का मुर्गा खरीदकर लाना. ध्यान रखना, मुर्गे का एक पंख भी सफ़ेद न हो.



फिर जब महल के सब नौकर नमाज़ पढ़ रहे हों, तुम उस मुर्गे को सुल्तान के मुर्गियों के दबड़े में छोड़ देना। चालीसवें दिन, आटे की एक गोली में अंगूठी को छिपाकर उसे मुर्गे को खिला देना। उसके बाद मैं सारे मामले को संभाल लूँगा। जैसा मैंने बताया है तुम बिल्कुल वैसे ही करना। फिर मैं सुल्तान को तुम्हारी चोरी के बारे में बिल्कुल नहीं बताऊँगा।”

नौकर ने आदेश पालन करने का पक्का वादा किया। फिर नौकर उठा, उसने कमरे का दरवाज़ा खोला और बाहर चला गया। उसके बाद लकड़हारे की भूख फिर से वापिस लौटी। इस बार उसने सुल्तान की मेज़ से लाई पूरी थाली को बड़े चाव से खाया। अब उसके दिल में चैन था, खुशी और उमंग थी।

चालीसवें दिन बिल्कुल सुबह-सुबह सुल्तान ने अपने वफ़ादार नौकर को भेजकर नए ज्योतिषी को अपने कमरे में बुलवाया। क्योंकि ज्योतिषी के दिल में अब तसल्ली थी इसलिए वो बड़े आत्मविश्वास के साथ सुल्तान के कमरे में घुसा।

“देखो तुमने चालीस दिन और चालीस रात का समय माँगा था जो मैंने तुम्हें दिया,” सुल्तान ने कहा। “अच्छा अब बताओ कि अंगूठी कहाँ है?”



मैं आज दोपहर की नमाज़ से पहले आपके सामने अंगूठी पेश करूंगा,” लकड़हारे ने कहा. “आप महल के आँगन में अपने सभी मुलाज़िमों से हाज़िर होने को कहें – सबसे ऊँचे ओहदे से लेकर सबसे निचले नौकर तक. साथ-साथ आपके महल में जितने भी जानवर हों – कुत्ते, बिल्ली, घोड़े, गाय-भैंस, मुर्गियां – सभी जिंदा जानवर भी वहां इकट्ठे हों. वे सभी आपके सामने एक जलूस में गुजरें. अल्लाह की रहमत से अंगूठी मिल जाएगी.”

सुल्तान यह जानने को बहुत इच्छुक था कि ज्योतिषी चोर को इस बड़ी भीड़ में कैसे पहचानेगा. जलूस में सबसे पहले औरतें आईं – सबसे महंगे रेशमीन कपड़ों से लेकर चिथड़े तक पहने हुए. वे सभी बुरका पहने थीं या फिर परदे में थीं. उन्हें देखकर ज्योतिषी की जुबान से एक शब्द भी नहीं निकला. फिर औरतें अपने हरम में चली गईं या फिर अपने-अपने कामों में लग गईं.

उसके बाद सुल्तान के प्रमुख वज़ीर से लेकर सभी दरबारी आए. सभी राजसी, आलीशान कपड़े पहने थे. उनके पीछे-पीछे वो नौकर-चाकर भी आए जो सुल्तान के घर में काम करते थे. सुल्तान के सामने से गुज़रते समय सबने अपना सिर झुकाया और फिर चुपचाप चले गए. अभी तक ज्योतिषी ने किसी पर कोई इलज़ाम नहीं लगाया था. लोग मुजरिम के बारे में अटकलें लगाने लगे और एक-दूसरे के कानों में फुसफुसाने लगे.



सबसे आखिर में जानवरों का जलूस निकला - एक-के-बाद-एक करके सभी मूक जानवर सुल्तान के सामने से गुज़रे. अचानक ज्योतिषी ने एक काले मुर्गे की ओर इशारा करके कहा, “ज़नाब, वहां एक काले रंग का मुर्गा जा रहा है. उसे पकड़कर कटवाइए. वही मुजरिम है. उसी के पेट में आपकी वो प्यारी अंगूठी है.”

फिर क्या था. तुरंत उस मुर्गे को पकड़कर सुल्तान के सामने लाया गया. जब उसे काटा गया तो ज्योतिषी की भविष्यवाणी के अनुसार उस काले मुर्गे के पेट में से सुल्तान की बेटी की कीमती अंगूठी बरामद हुई.



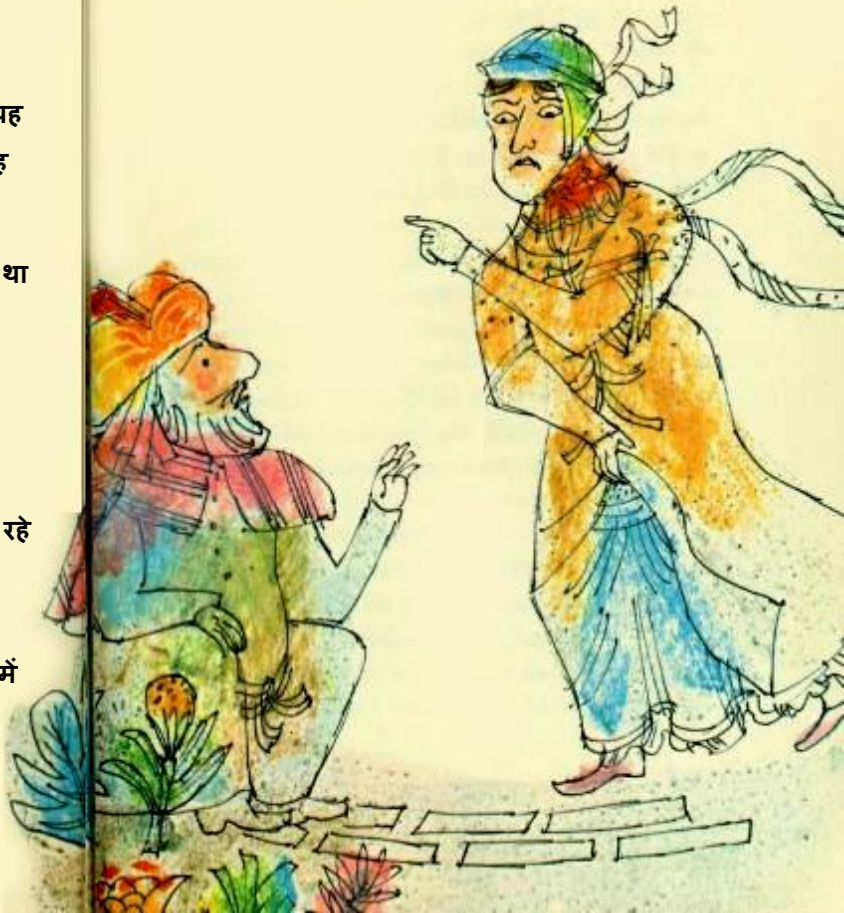
उसके बाद सुल्तान ने ज्योतिषी की ओर देखकर कहा, “तुम्हें इस महान सेवा के लिए इनाम मिलना ही चाहिए. मैं तुम्हें सुल्तान का आधिकारिक ज्योतिषी नियुक्त करता हूँ. तुम्हारी जब मर्ज़ी चाहे तब तुम महल के दरवाज़े से लगे हुए घर में आकर रह सकते हो. वहां तुम आराम और सकून की ज़िन्दगी बसर कर सकते हो.”

उसके बाद घबराए हुए लकड़हारे ने सुल्तान की इजाज़त ली और अपनी बीबी को यह पूरी कहानी सुनाने के लिए घर की तरफ दौड़ा. क्योंकि उन दोनों के पास कुछ खास सामान नहीं था इसलिए उन्हें तैयार होकर अपने नए घर जाने में कुछ भी समय नहीं लगा. छोटी झोपड़ी से वो अब एक आलीशान घर में गए थे. अब हर दिन वहां लकड़हारे की बीबी आईने में अपने चेहरे को निहारती और रोजाने नए-नए कपड़े पहनती थी. सुल्तान के दिए महंगे जेवरों से उसकी आँखें हटती ही नहीं थीं. उनके घर में कई नौकर थे जो लकड़हारे की बीबी के आदेश पर इधर-उधर दौड़ते फिरते थे. लकड़हारे की बीबी के लिए इससे अच्छी ज़िन्दगी भला और क्या हो सकती थी?

बिचारे लकड़हारे का क्या हाल था? वो पूरे दिन हाथ-पर-हाथ रखे बैठा रहता था। उसे फ़िक्र लगी रहती थी, और वो बेहद बेचैन रहता था – मालूम नहीं कब सुल्तान उसे अपनी सेवा के लिए तलब करे? बीबी अब जितनी ऐयाशी की ज़िन्दगी बसर कर रही थी, लकड़हारे की बेचैनी उतनी ही बढ़ती जा रही थी। क्या पता – एक क्षण में सुख-चैन की यह ज़िन्दगी उससे छीन जाए? लकड़हारे के लिए ऐयाशी की यह ज़िन्दगी एक भ्रम थी।

एक दिन जब लकड़हारा अपने बगीचे में सोच में डूबा था तब बीबी उसके पास दौड़ी हुई आई। वो बहुत उत्तेजित थी। उसने अपने पति से कहा, “तुम्हें इसके बारे में कुछ करना चाहिए। मुझसे यह गरीबी की ज़िन्दगी नहीं सही जाती है!”

लकड़हारे ने कहा, “तुम यह क्या कह रही हो। मुझे लगता है कि अब हम काफी आराम की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं। कुछ दिनों पहले जब हम झोपड़ी में रहते थे और रूखा-सूखा खाते थे तब भी हम अल्लाह का शुक्र अदा करते थे। अब क्योंकि हम एक आलीशान घर में रह रहे हैं इसलिए हमें ऊपरवाले का और ज्यादा शुक्रगुज़ार होना चाहिए। देखो तुम अपने रेशमीन कपड़ों में कितनी जंच रही हो। तुम्हारे गले में सोने का हार चमक रहा है। तुम भला इसे गरीबी की ज़िन्दगी कैसे कह सकती हो?”



“देखो,” बीबी ने आंह भरते हुए कहा, “अब तक मैं खुद को भाग्यवान समझ रही थी। पर आज सुबह मुझे मालूम पड़ा कि सुल्तान के प्रमुख ज्योतिषी का घर सुल्तान के महल के अन्दर ही है। प्रमुख ज्योतिषी की पत्नी मुझसे कहीं बेहतर और महंगे कपड़े पहनती है। उसके हीरे-मोतियों के सामने मेरे जेवर बिल्कुल फीके हैं। मैं अब अपनी ज़िन्दगी से बिल्कुल संतुष्ट नहीं हूँ। तुम सुल्तान के प्रमुख ज्योतिषी बनो। तभी मुझे खुशी मिलेगी।”

“प्रिय पत्नी,” तुम ईर्ष्या की आग में क्यों जल रही हो,” लकड़हारे ने बीबी को समझाने की कोशिश की। “हम मेहनतकश लोग हैं। इस तरह की हरकतें हमें शोभा नहीं देती हैं। हमारे पास जो कुछ भी है तुम उसी में खुश रहो।”

आप एक ऊँट को कूदकर, खाई पार करा सकते हैं, पर किसी बेवकूफ इंसान को तर्क नहीं समझा सकते हैं। लकड़हारे की बीबी की अब सिर्फ एक ही रट थी – सुल्तान के महल के अन्दर रहने की। “जाओ, उसने पति को आदेश दिया। तुम्हें इस घर में तब तक खाना नहीं मिलेगा जब तक तुम सुल्तान के प्रमुख ज्योतिषी नहीं बनते हो।”

बिचारे लकड़हारे ने अपने सिर को दोनों हाथों में थामा और सोचने लगा। वो एक समझदार आदमी था और उसे सिर के ऊपर छत की अपेक्षा अपनी ज़िन्दगी ज्यादा प्यारी थी। जिस घर में वो अभी रहते थे वो उनकी औकात से कहीं अच्छा था।

पत्नी को भी समझना चाहिए था कि पति उसे इससे अच्छा घर उसे नहीं दे सकता था। लकड़हारा, ज्योतिषी की गलत भविष्यवाणी के ज़ोखिम से भी अवगत था। प्रमुख ज्योतिषी बनने की बात तो दूर रही, गरीब लकड़हारा अपने वर्तमान ओहदे से भी परेशान था और उससे मुक्ति चाहता था। और जब तक उसके दिल में डर समाया था तब तक कोई भी घर – झोपड़ी या महल, उसे सकून नहीं दे सकता था।

तभी अचानक लकड़हारे के दिमाग में एक योजना आई जो एकदम सरल और सटीक थी। इसलिए उसने तुरंत उस पर अमल करने की ठानी। क्योंकि सुल्तान अपने ज्योतिषियों को बहुत काबिल मानता था इसलिए उस जैसा बेवकूफ भला उस ओहदे का कैसे हकदार हो सकता था? उसे लगा कि नए ज्योतिषी को बिल्कुल बेवकूफी से पेश आना चाहिए जिससे सुल्तान उसकी ज्योतिषी पर यकीन करना ही छोड़ दे। अपने ओहदे से मुक्त होने के बाद ही वो अल्लाह की बक्शी इस चमत्कारी ज़िन्दगी का लुत्फ उठा पायेगा।

उस दिन उसने दोपहर तक इंतज़ार किया और जब सब लोगों ने अपना कामकाज खत्म किया फिर वो महल के बीच वाले मैदान में जाकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, “सुल्तान! सुल्तान!” क्या किसी ने सुल्तान को देखा है? जल्दी करो! जल्दी करो! हमें जल्दी से सुल्तान को बचाना है!”



पूरे महल के दरबारी और नौकर नए ज्योतिषी के पास दौड़े-दौड़े आए. “क्या तुम पागल हो गए हो? तुम क्यों चीख-चिल्लाकर लोगों के आराम में खलल डाल रहे हो? तुम क्या सोच रहे हो?”

पर लकड़हारे ने इन सवालों का कोई जवाब नहीं दिया. वो दुबारा उसी तरह चिल्लाया, “सुल्तान! सुल्तान कहाँ है!”

कुछ देर में एक नौकर ने बताया कि सुल्तान हम्माम में नहा रहे थे. सुल्तान को उस समय परेशान नहीं किया जा सकता था.

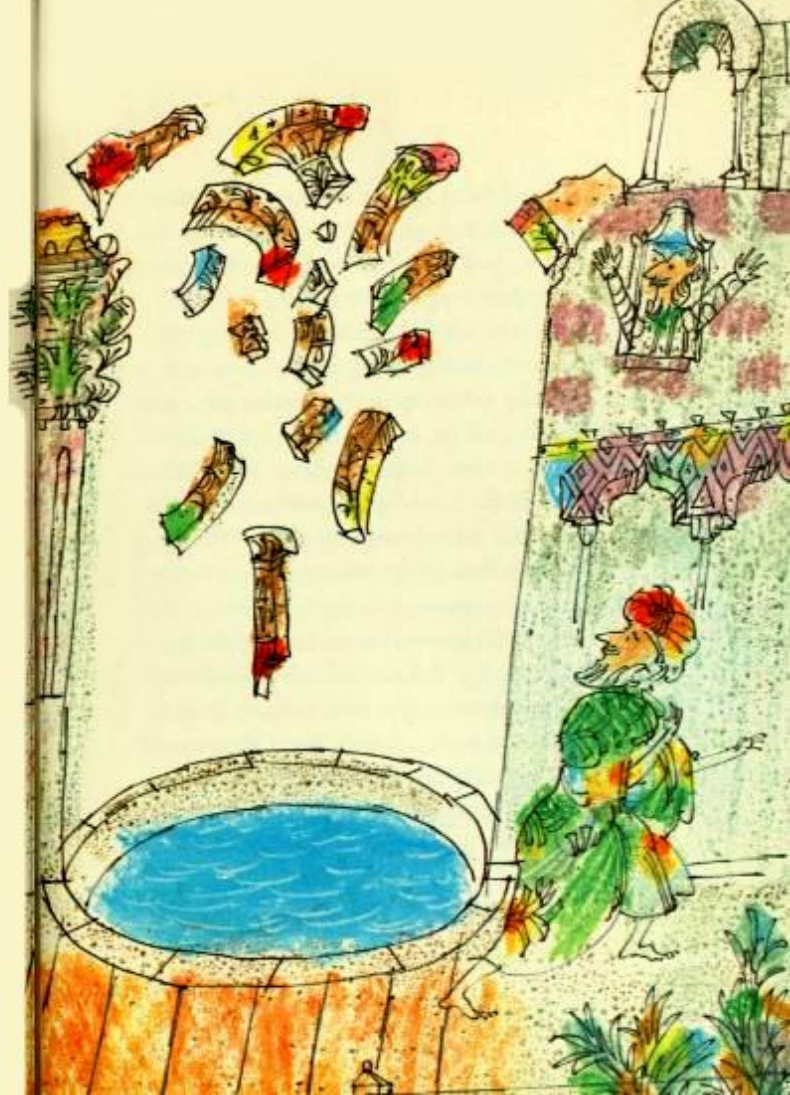
“तुम यह क्या कह रहे हो!” लकड़हारा ज़ोर से चिल्लाया. “सुल्तान ज़रूर परेशान होंगे जब हम्माम की छत उनके सिर पर आकर गिरेगी! मुझे तुरंत सुल्तान से मिलना है!”

तभी सुल्तान के दो निजी पहरेदारों ने नए ज्योतिषी को आकर पकड़ लिया. “लगता है इस आदमी की मत पूरी तरह मारी गई है,” उनमें से एक ने कहा. “इस पूरे राजमहल में हम्माम की छत सबसे पुख्ता और मज़बूत है!” फिर वो परेशान लकड़हारे को वहां से लेकर जाने लगे.

तभी सुल्तान को संगीत और हम्माम की आवाज़ में ऊपर के हाल की ऊंची-ऊंची आवाज़ें सुनाई दीं। तब सुल्तान एक तौलिया लपेटकर हम्माम से बाहर निकले। वो सीधे शोर मचाने वाले मुजरिम का सामना करना चाहते थे। जैसे ही सुल्तान ने हम्माम के दरवाज़े के बाहर पैर रखा, बस उसी क्षण हम्माम की छत नीचे आ गिरी और सारा मलबा हम्माम में आ गिरा।

जो कुछ हुआ उस पर सुल्तान को बिल्कुल यकीन नहीं हुआ। अचानक सुल्तान का सामना नए ज्योतिषी से हुआ। जो कुछ हुआ उससे नए ज्योतिषी को खुद सबसे ज्यादा ताज्जुब हुआ। “वाह मेरे ज्योतिषी,” सुल्तान ने बड़बड़ाते हुए कहा, “कोई साधारण इंसान इस आफत को आते हुए नहीं देख सकता था। तुमने अपने विवेक और समझदारी से मेरी जान बचाई है। इस महान सेवा के लिए मैं तुम्हें अपना प्रमुख ज्योतिषी नियुक्त करता हूँ।”

अपनी योजना की महान सफलता के बाद लकड़हारा अपनी बीबी को पूरी बात सुनाने गया। पूरी कहानी सुनने के बाद लकड़हारे की बीबी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। झट से उसने वो चीज़ें इकट्ठी कीं जो मूल्य में महंगी, पर वज़न में हल्की थीं। बाकी चीज़ों को वो वहीं छोड़ देना चाहती थी। उसे पता था कि सुल्तान के महल के अन्दर वाले घर में यहाँ से कहीं ज्यादा सुख-सुविधायें उपलब्ध होंगी।



राजमहल के अन्दर एक आलीशान घर उनका इंतज़ार कर रहा था. वहां कहीं ज्यादा नौकर-चाकर थे. वहां एक-से-एक बढ़िया कपड़े और हीरे-जेवरात थे जो किसी भी औरत की चाहत को संतुष्ट कर सकते. यानि, अब लकड़हारे की बीबी अपने हाल से बेहद खुश थी.

दूसरी तरफ लकड़हारे की कहानी दुखभरी थी. जैसे-जैसे उसकी बीबी खुश और संतुष्ट हुई, वैसे-वैसे ज्योतिषी को लेकर सुल्तान की ज़रूरतें और मांगें और बढ़ती गईं. बस एक ही गनीमत थी. उसके बाद चिंतित ज्योतिषी से, सुल्तान ने और कोई सवाल नहीं पूछे. महल के प्रमुख ज्योतिषी के नाते उसे हर समय सुल्तान के सामने हाज़िर रहना पड़ता था, खाने के समय भी, और जब सुल्तान बगीचे में घूमने जाते तब भी.

अगर कोई और इंसान होता तो शायद उसे इसमें बहुत गर्व और सकून मिलता, पर उस सीधे-सादे लकड़हारे को इस सब में बिल्कुल भी मज़ा नहीं आता था. वो इतने ऊंचे ओहदे पर पहुंचेगा यह उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था. उसे यह भी पता था कि उससे हुई कोई गलती उसे, आसमान से ज़मीन पर लाकर पटक देगी. एक साधारण टिड्डे के कमज़ोर पैर इतना भारी-भरकम ओहदे को ढोने में असमर्थ थे. उसे पता था कि एक दिन वो काल्पनिक दुनिया उसकी आँखों से ओझल हो जाएगी.

इसलिए जब सुल्तान के ख़ास मेहमान खाने पर आते तो प्रमुख ज्योतिषी बिल्कुल चुपचाप बैठा रहता, जबकि बाकी दरबारी सुल्तान से खुद की करीबी जताकर अपनी धाक जमाते.

सुल्तान भी इस बात से वाकिफ थे. फिर एक दिन सुल्तान ने प्रमुख ज्योतिषी की परीक्षा लेने की सोची. उस शाम जब सब लोग बगीचे में घूम रहे थे तब सुल्तान अचानक झुके और उन्होंने अपने मुड़ी में कुछ पकड़ा. फिर उन्होंने अपनी बंद मुड़ी को प्रमुख ज्योतिषी को दिखाकर पूछा, "तुम में कमाल की ताकत है. आज मैं अपने महल के सारे दरबारियों को तुम्हारी ताकत का सबूत दिखाना चाहता हूँ. मैंने अपनी मुड़ी में एक छोटी चीज़ पकड़ी है. अगर तुम उस चीज़ का सही नाम बता पाए तो मैं तुम्हारी कोई भी मुराद पूरी करूंगा. मैं ताकतवर हूँ और तुम्हारी मांगी चीज़ तुम्हें ज़रूर दूंगा. क्या तुम अपनी काबलियत से बता सकते हो कि मेरी मुड़ी में क्या है?"

बिचारे लकड़हारे को इसी क्षण का डर था. उसके पास इस प्रश्न का कोई सोचा-समझा जवाब नहीं था. सुल्तान ने बगीचे में से जो कुछ उठाया था और जिसे वो मुड़ी में पकड़े था उसमें टिड्डे जैसे एक अदना इंसान की जिंदगी भी बंद थी, जिसकी तकदीर ने ही उसे एक ज्योतिषी बनाया था.



अपनी निराशा में उस बूढ़े लकड़हारे को अपने गाँव की एक पुरानी कहावत याद आई : “टिड्डा, जब पहली बार कूदता है, तो बच जाता है. दूसरी बार कूदने पर वो ज़िंदा रहता है. पर जब वो तीसरी बार कूदता है तब वो ज़रूर पकड़ा जाता है.” यह कहने के बाद उसने सुल्तान का इंतज़ार किया. इस कहावत में उस गरीब लकड़हारे की खुद की ज़िन्दगी शामिल थी. यही उसकी ज़िन्दगी की सच्चाई थी और उसके अलावा वो गरीब और कोई सच्चाई जानता भी नहीं था.

जब सुल्तान ने अपनी मुट्ठी खोली तो उसमें एक टिड्डा निकला. “आप लोग देखें, उसने अपने सारे दरबारियों से कहा. “इस इंसान में ग़ज़ब की काबलियत है. वो कोई साधारण आदमी नहीं है. अच्छा, मेरे प्रमुख ज्योतिषी, अब तुम जो चाहो वो मुझ से मांगो. वो मैं तुम्हें ज़रूर दूंगा.”

अब लकड़हारे खुश था और उसका दिल हल्का था. उसने अदब से झुककर कहा, “अल्लाह की रहमत से मैं आपकी कुछ सेवा कर पाया. मेरी एक ही इच्छा है : मैं आपका ज्योतिषी नहीं बनना चाहता हूँ. मैं सिर्फ आराम से जीना चाहता हूँ और अल्लाह की दुआओं का गुणगान करना चाहता हूँ.”

“तुम्हारी इच्छा ज़रूर पूरी होगी,” सुल्तान ने ऐलान किया. “राजमहल में जो तुम्हें घर मिला है वो अब से तुम्हारा है. तुम मेरे दरबार में अपनी मनमर्जी से आ-जा सकते हो. मैं तुम्हें इसी क्षण प्रमुख ज्योतिषी के ओहदे से मुक्त करता हूँ. अब तुम जाओ और अपनी बाकी ज़िन्दगी आराम और सकून से बसर करो.”

उसके बाद उस गरीब लकड़हारे ने बीबी के साथ अपनी बाकी ज़िन्दगी सुल्तान के महल में बिताई. वहां उसको अच्छा खाना मिलता था. उसकी निगाहें हमेशा ऊपर आसमान पर लगी रहती थीं, जहाँ से परवरदिगार ने उस टिड्डे जैसे आदमी पर अपना रहमों-करम दिखाया था.

अंत

